[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3273

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

पर्यावरण संरक्षण एवं मानवीय संवेदना आज के संदर्भ में

सीमा शर्मा[1], आभा तिवारी[2]
[1]शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, उज्जैन
[2]शास. महाविद्यालय पिपलियामण्डी, जिला मंदसौर

मानव एवं प्रकृति एक दूसरे के पूरक हैं। मनुष्य का जीवन प्रकृति अर्थात् पर्यावरण संरक्षण के बिना संभव नहीं है। मनुष्य की आत्मकेंद्रित सोच के कारण प्रकृति का दोहन करते हुए उसने संरक्षण का विचार त्याग दिया। कटते हुए वृक्ष, प्रदूषित होती हुई नदियाँ, सूखते हुए कुँए, धुँए और धूलका गुबार बनती हुई हवा, कीटनाशकों के जहर से भरी हुई खाद्य सामग्री, मनुष्य की सूखती हुई संवेदना की कहानी कह रहे हैं।

हम सब प्रकृति की संतान है। पँचतत्वों से निर्मित है, हमारा शरीर : भूमि, वायु, जल, आकाश एवं अग्नि। ये पाँच तत्व ही पर्यावरण हैं। इनमें से एक भी यदि प्रदूषित होता है तो मानव जीवन भी प्रभावित होता है।

"माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।

(अथर्व 12/12)[1]

अर्थात् भूमि मेरी माता है एवं मैं पुत्र हूँ "मानव"।

वर्तमान संस्कृति में "माता" के स्थान से प्रकृति को विस्मृत कर दिया गया है।

मानवीय संवेदनाओं को पुनः जाग्रत करने हेतु युवा वर्ग के लिये "मूल्य आधारित शिक्षा" की आवश्यकता महसूस की गई। "मूल्यपरक शिक्षा" का अर्थ है जीवन को सार्थक बनाने की पहल। शिक्षा केवल ज्ञानार्जन करने का साधन ही नहीं, अपितु "विश्व कल्याण" हेतु जीवन को उपयोगी बनाने की प्रथम सीढ़ी है। "रोजगार" प्राप्त करने के अतिरिक्त "सर्वजन हिताय" का लक्ष्य प्राप्त करना ही आज की शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिये। "सर्वप्रथम इस पृथ्वी" को जीवन जीने योग्य बनाए रखना प्रत्येक मानव का प्रथम कर्त्तव्य है। वृक्षों, नदियों के जीवन से हमें यही प्रेरणा मिलती हैं : हमारे प्राचीन मूल्य हमें यही शिक्षा देते हैं :

"परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थमिदं शरीरम्।

(सुभा. भां 78, 10)[2]

अर्थात् परोपकार के लिये वृक्ष फलते हैं, परोपकार के लिये नदियाँ प्रवाहमान रहती हैं, परोपकार के लिये गाएँ दूध देती हैं – यह शरीर परोपकार के लिये ही है। मनुष्य समस्त प्राणियों को साथ लेकर चले यही संदेश है।

सदियों से कवि की कल्पना को पंख देती हुई प्रकृति आज के युवा से संरक्षण की गुहार लगा रही है। आज हम भौतिकवादी लेनदेन के युग में इतने व्यस्त हो गए हैं कि हमें प्रकृति की ओर एक क्षण देखने की भी फुरसत नहीं है, विलियम एच डेविस की कविता श्स्मपेनतमश में कवि ने भावनाएँ व्यक्त की हैं : प्रकृति के चित्रण के बिना काव्य भी अधूरा है :

"What is this life full of care,
We have no time to stand and stare.
No time to see when woods we pass,
Where squirrels hide their nuts in grass.

Poem by W.H. Dawies [3]

हमें प्रकृति के सुंदर पक्षी, वृक्ष, पहाड़, नदियों को देखने का समय नही है। प्रकृति की सुंदरता को हमने देखने योग्य छोड़ा भी नहीं हैं :

"I make a fallen tree my chair,
And soon forget no cushion's there,
Aye, I am richer with my dreams
Than banks where men dull eyed
And cold"[4]

Poem "Return to Nature by William H. Davies

यही भावनाएँ William Wordsworth कविता "The world is too much with us" में व्यक्त करते हैं

"The world is too much with us, late and soon,
Getting and spending, we lay waste our powers,
Little we see in Nature that is ours,
We have given our hearts away,
a sordid boon ! _____"[5]

आवश्यकता है मानवीय संवेदनाओं को पुनः जाग्रत करने की। हम कैसी पृथ्वी आने वाली पीढ़ी को देने वाले हैं, यह हमारे आज के सोच पर निर्भर करता है। मूलपरक शिक्षा के माध्यम से वृक्षों के महत्व, वनों के महत्व, पत्तियों के महत्व, स्वच्छ जल एवं वायु के महत्व को प्रतिपादित करने का प्रयास शीघ्र ही जनमानस को एक नई दिशा प्रदान करेगा व पर्यावरण संरक्षण का ध्येय पूर्ण हो सकेगा।

संदर्भ

1 *पर्यावरण चेतना, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल*
2 *सूक्ति सुधा "युग निर्माण योजना विस्तार, ट्रस्ट गायत्री तपोभूमि, मथुरा, पृ.67*
3 *Poem Leisure by W.H. Davies www.poltryfoundation*
4 *Poem "Return to Nature by W.H. Davies www.poltryfoundation*
5 *Poem "The world is too much with us" by William Wordsworth www.poltryfoundation*